Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

गजानन माधव मुक्तिबोध का काव्य शिल्प - फैंटेसी के रूप में

Manju*

MA in Hindi (UGC NET)

सार - *गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म ग्वालियर राज्य के एक कस्बे में 14 नवम्बर 1917 ई (श्योपुर, जिला मुरैना) को हुआ था। इन्होंने छात्र जीवन से ही लेखन कार्य आरम्भ कर दिया था। 1938 में इन्दौर में अपनी बुआ के यहां रहते हुए उन्होंने शान्ता बाई नामक पड़ोस की एक युवती से प्रेम विवाह किया। मुक्तिबोध हिन्दी कविता को सर्वथा नवीन दिशा की ओर ले जाने वाले साम्यवादी विचारधारा करके चलने वाले, तेजस्वी विचारक तथा औपचारिकताओं से सदा दूर हरने वाले और अभावों से जूझने वाले प्रयोगवादी कवि थे।*

मुक्तिबोध की रचनाओं में काव्य-ग्रंथ 'चांद का मुंह टेढ़ा है' प्रसिद्ध है। इनके अन्य ग्रंथों में एक साहित्यिक की डायरी कामायनी एक पुनर्विचार नई कविता का आत्मसंघर्ष 'भारत इतिहास और संस्कृति' नामक ग्रंथ प्रमुख है। मुक्तिबोध के समस्य काव्य मूल्यों के मूल में यह अन्तः संघर्ष किसी न किसी रूप से अवस्थित है। यह कभी समझपत नही होता बल्कि व्यक्तित्व का सामाजिक अन्तविरोंध तथा विसंगतियों से बराबर संघर्ष जारी रहता है। वे मानते हैं कि आज कवि को तीन क्षेत्रों में संघर्ष करना पड़ता है।

1. *तत्व के लिए*

2. *अभिव्यक्ति को सक्षम बनाने के लिए*

3. *दृष्टि विकास के लिए यही कारण है कि इनकी बहुत सी कविताओं में नवीन परिस्थितियों से पैदा हुई मन स्थितियों का प्रभावशाली ढंग से चित्रण हुआ है। इनकी कविता का उद्धरण द्रष्टव्य है।*

"वह परस्पर की मृदुल पहचान जैसे

अतल गर्भा भव्य धरती हृदय की निज कूल पर

मृद स्पर्श कर पहचान करती, गूढ़तम उस विशद

दीर्घछाय श्यामल काय बरगद वृक्ष की

जिसके तले आश्रित अनेको प्राण

इनकी एक कविता "एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्मकथन से लिया गया उदाहरण भी दखें।

"खूबसूरत कमरों में कई बार

हमारी आंखों के सामने/हमारे विद्रोह के बावजूद

www.ignited.in

बलात्कार किये गये/नक्षीदार कक्षों में

दबले-पिघलते हुए एक भाप बन गये।"

----------X----------

भूमिका -

मुक्तिबोध ने अपने लिए फैटेसी के शिल्प को चुना था जिसमें मिथक, प्रतीक, रूपक, उपमा, बिम्ब आदि अभिव्यक्ति के विभिन्न उपकरण घुल-मिलकर आए हैं। अतः इस इकाई के अंतर्गत ही उपर्युक्त उपकरणों के महत्व पर भी प्रकाश डाला है। वस्तुतः "फैटेसी" आपके लिए एक नया शब्द है जो हिन्दी का अपना न होकर अंग्रेजी का शब्द है। अतः इसके अर्थ के साथ ही फैटैसी के स्वरूप, उसकी प्रकृति के विषय में मनोविश्लेषणवादी मनोवैज्ञानिकों, क्रिस्टोफर, काडवेल, जैसे समर्थ साहितियक चिंतकों की मान्यताओं पर भी विचार करना जरूरी है। फैटेसी का मुक्तिबोध सम्मत अर्थ "एक साहित्यकार के स्वप्न के भीतर स्वप्न, विचारधारा के भीतर और एक प्रचछन्न विचारधारा कथ्य के भीतर एक और कथ्य मस्तिष्क के भीतर एक और मस्तिष्क, कक्ष के भीतर एक और गुप्त कक्ष है।"

गजानन माधव मुक्तिबोध की गणना हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों में की जाती है , क्योंकि वे सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को अभिव्यक्ति देने वाले कवि है। उनकी 17 कविताएं अज्ञेय द्वारा सम्पादित तार-सप्तक में संकलित हैं। इसके अलावा उनका एक अन्य काव्य संग्रह 'चांद का मुंह टेढा है' भी प्रकाशित हुआ जिसमें 28 कविताएं संकलित हैं। तार सप्तक में संकलित कविताओं में अधिकांश विषय की दृष्टि से प्रगतिवादी, किन्तु शिल्प की दृष्टि से छायावादी है। इन कविताओं में प्रमुख हैं आत्मा के मित्र मेरे, मृत्यु और कवि, हे महान, और नाश देवता। उनकी प्रगतिवादी दृष्टि परिवेश बोध, सामाजिक चिन्तन और अनुभव वैविध्य पर आधारित दिखाई पड़ती है। उन्हें लगता है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में इतनी पीड़ा भरी हुई है कि उस पर एक महाकाव्य लिखा जा सकता है।

"मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में चमकता हीरा है।

हर एक छाती में आत्मा अधीरा है।

प्रत्येक सुस्मिता में विमल सदानीरा है

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है।

दीन-हीन शोषित सर्वहारा के प्रति उन्हें सच्ची सहानुभूति है वे एक शोषणमुक्त समाज की आशा करते हैं।

समस्या एक

मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में

सभी मानव

सुखी, सुन्दर व शोषण मुक्त

कब होंगे

मुक्तिबोध के काव्य में फैटेसी

गजानन माधव मुक्तिबोध ने मानव जीवन की जटिल संवेदनाओं और उसके अन्तद्वंद्वों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के लिए फैटेसियों का कलात्मक उपयोग किया है। 'फैटेसी' में कल्पनाओं और विचारों की परतें एक के बाद एक खुलती जाती है और कवि की मानसिक उर्वरता का सही बोध पाठकों के समक्ष उपस्थित होता है।

'फैटेसी' शब्द का निर्माण युनानी शब्द 'फैटेसिया' से हुआ है। जिसका अर्थ है मनुष्य की वह क्षमता जो संभाव्य संसार की सृजना करती है। मुक्तिबोध के अनुसार - 'फैटेसी मन की निगूढ़ वृतियों का अनुभूत जीवन समस्याओं का इच्छित विश्वासों और इच्छित जीवन स्थितियों का प्रक्षेप है। मुक्तिबोध की अनेक कविताएं फैटेसीपरक कविताएं हैं यथा - ब्रह्माराक्षस, अंधेरे में, लकड़ी का रावण आदि।

चांद का मुंह टेढा है, में मुक्तिबोध की जो कविताएं संकलित हैं उनमें दो कविताएं ब्रह्माराक्षस एवं अंधेरे में अपनी फैटैसी के कारण अधिक चर्चित रही है। यहां इन दोनों कविताओं के मन्तव्य को तथा उसकी फैटेसी को व्यक्त किया जा रहा है।

ब्रह्माराक्षस

इस कविता में ब्रह्माराक्षस मध्यवर्ग की बौद्धिक चेतना का प्रतीक है। इस चेतना के कारण यह मुक्ति के लिए छटपटाता है। जीवन पर्यन्त जो ज्ञान वह अर्जित करता है उसी से अपनी

www.ignited.in

मुक्ति का पथ खोजता है। पर मुक्ति के इस प्रयास में वह और भी उलझता जाता है। यहां संकेत यह है कि व्यक्ति प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक नही बना पाता उसे क्रिया में परिणत नही कर पाता। परिमाणतः भटकता रहता है कि और रूष्ठा व निराशा का शिकार हो जाता है। यहां कवि यह कहना चाहता है कि संचित अनुभव और ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह निरंतर विकसित एवं प्रबुद्धित होता रहे और भावी ज्ञान की आधारशिला बने। यदि ऐसा नही होगा तो अतीत का ज्ञानात्मक संवेदन और अनुभव व्यर्थ प्रमाणित हो जाएगा।

मूलबद्ध संस्कारों के कारण विकसित 'पाप छाया' से 'आत्मशुद्धि' के लिए वह निरन्तर बावड़ी में स्नान करता हुआ अपनी देह घिसता रहता है किन्तु उसका मैल कम होने के बजाय बढता ही जाता है।

गहन अनुमानिता

तन की मलिनता

दूर करने के लिए प्रतिफल

पाप छाया दूर करने के लिए दिन रात

स्वच्छ करने

ब्रह्माराक्षस

घिस रहा है देह

हाथ के पंजे बराबर

बाह छाती मुंह छपाछप

खूब करते साफ

फिर भी मैल

बुद्धिजीवी की यही विडम्बना है। वह प्रत्येक विचारक के अंत की मनोनुकूल व्याख्या करता हुआ उसी में उलझा रहता है। उसका अपूर्ण ज्ञान उसे दम्भी बना देता है औश्र इसलिए तिरछी पड़ी रवि रश्मि को देखकर उसे लगता है कि सूर्य भी उसे झुककर प्रणाम कर रहा है।

वस्तुतः ब्रह्माराक्षस की ट्रेजिडी आज के बुद्धिजीवी की ट्रेजिडी है। वह ज्ञानोपार्जन करके भी मनोवांछित परिवर्तन नही कर पाता। इस प्रक्रिया में वह जो प्रयत्न करता है वे असफल हो जाते हैं। परिणामतः वह निराशा और कुण्ठा से भर जाता है। उसकी मूल विडम्बना यह है कि वह उपलब्ध उपलब्धतता को क्रिया में नहीं बदल पाता, परिणामत अन्तः बाह्य संघर्ष में जूझता रहता है।

मुक्तिबोध की धारणा थी कि अतीत से पूरी तरह टूटकर कोई भी वर्तमान सार्थक भविष्य का रूप नही ले सकता। इस कविता में वे इसी विचारधारा को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हैं। ब्रह्माराक्षस अतीत की बौद्धिक चेतना है जो बावड़ी रूपी वर्तमान समूह मन में रहता है और अपनी आत्मा के अन्वेषण में रत है।

मुक्तिबोध अपनी फैटेसियों में प्रतीकों का माध्यम ग्रहण करते हैं वे सामान्य भाषा में नहीं अपितु प्रतीकों और बिम्बो की भाषा में बोलते हैं।

अंधेरे में, कविता में फैटेंसी -

मुक्तिबोध की यह लम्बी कविता लगभग 45 पृष्ठों की है और उनके काव्य संकलन चांद का मुंह टेढा है में संकलित है। इस कविता का प्रारम्भ भी कवि ने 'फैंटसीपरक' वातावरण से किया हैं यथा -

वृक्षों के अंधेरे में छिपी हुई किसी एक

तिलस्मी खोह का शिलाद्वार

खुलता है धड़ से

घूमती है लाल-लाल मशाल अजीब-सी

अन्तराल बिवर के तम में

लाल-लाल कुहरा

कुहरे में सामने रक्तालोक स्नात पुरुष एक

रहस्य साक्षात्।

इस कविता में दो रक्तालोक स्नात पुरुष है। इनमें से एक तो अंधेरे कमरों में चक्कर लगा रहा है और दूसरा बाहर तालाब की लहरों में अपना चेहरा देखता हुआ भीतर आने के लिए सांकल बजा रहा है। वस्तुतः ये दोनों रक्तालोक स्नात पुरुष क्रमशः सामाजिकता एवं कविता के प्रतीक है। मुक्तिबोध इन प्रतीकों के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य की पूर्ण सम्भावनाएं तभी प्रकट होगी जब कविता सामाजिकता को ग्रहण कर ले और समाज कविता को अंगीकार कर ले।

www.ignited.in

दूसरे शब्दों में दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। इस कविता में जिस अंधेरे का उल्लेख है वह सांकेतित अंधेरा है कि आज सामाजिकता अव्यवस्था से घिर गई है तथा कवि के मानस में भी अंधेरा भर गया है। उसका व्यकितत्व भी अंधकारग्रस्त है उसे आत्मान्वेषण करते हुए उपलब्ध जीवन सत्यों से आत्म विस्तार करना होगा तभी यह अंधेरा दूर होगा। उसे मैं से हम की ओर जाना होगा, अपनी अस्मिता एवं इमता को समाज समर्पित करना होगा। तभी आत्मशुद्धि होगी और तभी प्रकाश हेागा। निश्चय ही यह कवि के आत्म परिष्कार एवं आत्म विस्तार को द्योतित करने वाली फैंटेसी है। यहां रक्तालोक स्नात पुरुष को मानव संस्कृति के विकास हेतु संघर्षरत संस्कृति पुरुष कवि का प्रतीक माना जा सकता है जो मध्यवर्ग की आदर्शवादिता को दृढ़ता से धारण किए हुए है और जिसकी प्रवृति समझौतावादी नहीं है।

मुक्तिबोध की कुछ अन्य कविताएं यथा - "दिमागी गुहान्धकार का ओरांग ऊटांग" और "लकड़ी का बना रावण" भी फैंटेसीपरक कविताएं है। ओटांग ऊटांग से कवि का अभिप्राय मन की भीतरी परतों में दबे अवचेतन से है यथा -

कोठे के सावले गुहान्धकार में

मजबूत सन्दूक दृढ़ भारी भरकम

और उस सन्दूक के भीतर कोई बन्द है

यक्ष, या कि ओरांग ऊटांग, हाय

"लकड़ी के बने रावण" को डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने उस काव्य नायक का प्रतीक माना है जो अपने परिवेश से कट गया है वह शिखर पर अकेला खड़ा है - अपने मोह से घिरा हुआ है। इसे यदि माक्र्सवादी दृष्टि से देखें तो यह रावण पूँजीजीवादी वर्ग का प्रतीक है जो बस अब नष्ट होने ही वाला है।

मैं मन्त्र कीलित-सा भूमि में गड़ा-सा

जब खड़ा हूँ

अब गिरा तब गिरा

इसी पल कि उस पल।

समग्रतः यह कहा जा सकता है कि मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में फैंटेसी का सफल प्रयोग किया है। ये फैंटेसियां उनके अन्तद्र्वंद्वग्रस्त मन से उद्भूत है किन्तु इनका भावात्मक उद्देश्य तथा सम्वेदनात्मक दिशा है भले ही फैंटेसी मानसिक प्रक्रिया हो, किन्तु सामाजिक यथार्थ से जुड़कर उसने अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है। मुक्तिबोध मानवीय विडंबनाओं एवं उन्हें सक्रिय प्रतिरोध में रूपांतरित करने वाले भयावह यथार्थ के लेखक थे; वे जन विरोधी समाज व्यवस्था से निरंतर संघर्ष करते रे; उनकी कविता के बावजूद वजूद का प्रश्न पीड़ित मनुष्य के वजूद से जुड़ा हुआ था। दूसरे शब्दो में उनकी काव्य प्रक्रिया जीवन प्रक्रिया से अभिन्न थी। मनुष्य जिस तरह अपनी पहचान खोकर फिर से उसे पाने की निर्णायक लड़ाई लड़ रहा है उसे मुक्तिबोध ने कल्पना के स्तर पर संप्रेष्य बनाया है।

मुक्तिबोध निम्नमध्यवर्गीय संस्कारों के कवि थे। उनकी रचनाओं में निम्नमध्यवर्गीय व्यक्ति कई कोनों और गठानों के साथ चित्रित किया गया है। निम्नमध्यवर्ग शिक्षा के कारण सामाजिक संरचना से परिचत होता है। सुविधाकांक्षी होने के कारण चूंकि वह कोई जोखिम उठाना नहीं चाहता और शोषण का अभ्यस्त हो जाता है। इसलिए पूंजीवादी साम्राज्य के विरूद्ध संघर्ष नही कर पाता। वह विचारधारा के स्तर पर खतरनाक पूंजीवादी व्यवस्था से अलगाव महसूस करता है। वह जानता है कि अलगाव पूंजीवादी उत्पादन संबंधों की देन है। इसके निरर्थकता बोध आत्म निर्वासन एवं विरूपता की स्थिति उत्पन्न होती है। लेकिन अपनी निम्नमध्यवर्गीय कमजोरियों के कारण वह संघर्ष के लिए भी तैयार नहीं होता। दूसरी बात अपने संश्लिष्ट चरित्र की वजह से पूंजीवादी समाज में क्रांति का नेतृत्व मध्यवर्ग नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में अपने उद्धार के लिए उसका मजदूर वर्ग के पीछे गोलबंद होना जरूरी है। अतः मध्यवर्गीय तामझाम से मुक्त होकर चेतना के स्तर पर निम्नवर्गीय संस्कारों के समरूप होना उसकी अनिवार्यता है।

अंधेरे में "कविता व्यक्तितव के विघटन से निजात पाकर व्यवस्था-विरोधी क्रांतिकारी सामाजिक चेतना के समरूप होने का एक कलात्मक दस्तावेज है।

सहर्ष स्वीकारा है कि मुक्तिबोध की कविताएं आपको प्रेम करना नहीं सिखाती उनकी कविताओं में प्रेमी अपनी प्रेमिका को गुलाब नहीं दिया करता ना ही फूलों से उसकी तुलना करता है मुक्तिबोध सच कहते हैं और सच को स्वीकार करने की सलाह देते हैं। वह अभिव्यक्ति के खतरे उठाने की बात किया करते हैं जैसे -

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे

उठाने ही होंबगे

तोड़ने होंगी ही मठ और गढ़ सब

पहुंचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार

संदर्भ

1. (हिन्दी साहित्य) एन.एन. ओझा

2. प्रतियोगिता हिन्दी साहित्य - अशोक तिवारी

3. हिन्दी गद्य विवेचना, पृष्ठ संख्या 74, संकलन व संपादन प्रो. जवरीमल्ल पारख

4. प्रयोगवाद व प्रगतिवादी काव्यधारा- अज्ञेय

Corresponding Author

Manju*

MA in Hindi (UGC NET)

senkaswan045@gmail.com